जीवन दर्शन

कवि परिचय

केशव दास

केशवदास रीतिकाल के आचार्य कवि हैं। केशव ने ही हिन्दी में संस्कृत की परम्परा की व्यवस्थापूर्वक स्थापना की थी। आधुनिक युग के पूर्व तक उसका अनुगमन होता आया है। इनके पहले भी रीतिग्रंथ लिखे गए पर व्यवस्थित और समग्र ग्रन्थ सबसे पहले इन्होंने ही प्रस्तुत किए। इनका जन्म सं० 1612 के लगभग हुआ। ओरछा नरेश महाराजा रामसिंह के दरबार में इनका विशेष आदर-सम्मान था।

ये संस्कृत के बड़े पंडित थे। इनकी कविता बहुत गूढ़ होती थी। इसी से इन्हें 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा जाता है। इनकी कविता के विषय में यह भी प्रसिद्ध है कि

"कवि का दीन न चहै बिदाई। पूछै केशव की कविताई॥"

इनके रचे हुऐ आठ ग्रंथ कहे जाते है – रसिक प्रिया, कविप्रिया, रामचंद्रिका, विज्ञानगीता, वीरसिंहदेव चरित, जहाँगीर चंद्रिका,नखशिखा और रत्न बावनी। उनमें से चार बहुत प्रसिद्ध है– रामचंद्रिका, कविप्रिया, रसिकप्रिया और विज्ञानगीता। लोग कहते हैं कि रामचन्द्रिका उन्होंने तुलसीदास जी के कहने से लिखी। रामचन्द्रिका महाकाव्य है।

केशवदास ने लक्षण-ग्रंथ ही नहीं लक्ष्य ग्रंथ भी लिखें हैं। शृंगार ही नहीं, अन्य रसों की भी रचनाएँ की हैं। मुक्तक ही नहीं, प्रबंध काव्य की भी रचना की है। इनके लक्षण ग्रंथ तीन है– रसिक प्रिया, कविप्रिया और छन्दमाला। केशव के प्रसिद्ध महाकाव्य

कविता जीवन की अभिव्यक्ति ही है। जीवन के विस्तार को कविता अपनी संक्षिप्तता में कुछ इस तरह से बाँधती है कि जीवन व्यवहार के अनेक प्रसंग, उसमें मानवीय भाव चेतना के आधार बिन्दु बन जाते हैं। आस्था , विश्वास, श्रद्धा और स्नेह जैसे भाव मानवीय व्यवहार को सार्वभौमिक और सर्वकालिक स्वीकृतियाँ देनेवाले हैं। इन भावों की भूमि पर ही वे जीवन– मूल्य निर्धारित होते हैं, कविता इन्हीं जीवन-मूल्यों से अपने ताने-बाने बुनती है। कविता का लक्ष्य मनुष्यत्व की प्राप्ति में निहित है। इसलिए कविता में मानवीय चेतना के विस्तार के अवसर सदैव उपस्थिति होते रहे हैं। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक सभी कवियों ने मानव-मूल्यों को अनेक तरह से अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। प्रबंध काव्यों में जहाँ जीवन-दर्शन से संबंधित अनेक पक्षों की अभिव्यक्त करने के अवसर उनकी चरित्रगत – संरचनाओं से प्राप्त होता है, वहीं मुक्तक काव्य में किसी भाव पर केन्द्रित जीवन दर्शन की झलक प्राप्त हो जाती है। जायसी के पद्मावत, तुलसी के रामचरित मानस और केशव की रामचंद्रिका जैसे महाकाव्यों में जीवन –दर्शन को अभिव्यक्त करने के अनेक प्रसंग उनकी चरित रचनाओं में उपलब्ध हो जाते हैं।

रीतिकाल के कवि केशवदास की रामचंद्रिका मानवीय-व्यवहारों को अपने कथा विन्यास में पिरोए हुए है। केशव की संवाद योजना अपनी प्रस्तुति में बेजोड़ है। प्रस्तुत काव्यांश में उन्होंने रावण-अंगद के संवाद के माध्यम से संवादों की संक्षिप्तता, अर्थगर्भिता और उसकी मारक शक्तियों के साथ-साथ राजसी परिवेश की नीति-निपुणता तथा व्यक्ति की प्रत्युत्पन्न मति का भी परिचय प्रदान किया है। इस संवाद में अंगद की निर्भीक– युक्तियों से नैतिक व्यक्तित्व प्रतिध्वनित होता है। राम के सेवक के रूप में उनकी राम के प्रति आस्था इस संवाद में अडिग है। वे रावण को समझाते हैं कि वह राम की शरण में जाए, किन्तु रावण अपने अहंकार को लगातार प्रकट करता रहता है। अंगद अपनी व्यंग्यात्मक शैली में अपने चतुराई पूर्ण उत्तर उसे देते हैं। इसी तरह यह संवाद योजना जीवन– व्यवहारों के साथ-साथ भाव संवेदनाओं की टकराहट को भी व्यक्त करती है।

आधुनिक हिन्दी कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर गिरिजाकुमार माथुर के काव्य में जीवन संवेदना के अनेक गहन रूप उपस्थित हुए हैं। जीवन ऊष्मा से आपूरित उनकी कविता इस विषम– समय में भी राहत देने वाली है। उन्होंने प्रस्तुत कविता में जीवन में निहित, आस्था और विश्वास जैसे मानवीय मूल्यों की महत्ता को स्पष्ट किया है। कविता में कर्ण द्वारा किये गए कवच– कुंडल दान की कथा को प्रसंगोद्भावना से व्यक्त किया गया है कि जीवन में व्याप्त आस्था और विश्वास जैसे भाव ही जीवन में त्याग की भावना को परिपुष्ट करते हैं।

रामचन्द्रिका में कथा के क्रमबद्ध रूप और अवसर के अनुकूल विस्तार-संकोच का अपेक्षित ध्यान नहीं रखा गया है । केशव ने अपने ग्रंथ, साहित्य की सामान्य काव्य भाषा , ब्रज भाषा में लिखे हैं। रामचन्द्रिका और विज्ञान गीता में संस्कृत का प्रभाव अधिक है। केशव के काव्य की दुरूहता का कारण संस्कृत के प्रयोगों या शब्दों को हिन्दी में रखना है। रसिकप्रिया में इन्होने हिन्दी काव्य प्रवाह के अनुरूप सशक्त,समर्थ और प्रांजल भाषा रखी है। इन्होंने सब प्रकार की भाषा में रचना करने का अभ्यास किया हैं।

केशव की रचना में उनके तीन रूप दिखाई देते है - आचार्य का, महाकवि का और इतिहासकार का । ये हिन्दी के प्रथम आचार्य हैं। हिन्दी की सारी परम्परा को इन्होंने प्रभावित कर रखा है । कविप्रिया के माध्यम से इनकी सबसे अद्‌भुत कल्पना अलंकार सम्बन्धी है । इनका कविरूप इनकी प्रबंध एवं मुक्तक दोनों प्रकार की रचनाओं में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है । बिहारी ने इनसे भाव,रूपक आदि ग्रहण किए तथा देव ने उपमा और उक्ति तक लेने में संकोच नहीं किया। इनमें एक विशिष्ट गुण है, संवादों के उपयुक्त विधान का । संवादों में इनकी उक्तियाँ विशेष मार्मिक है।

केशवदास जी हिन्दी के प्रमुख आचार्य हैं। केशवदास की रचनाएँ पूर्णत: शास्त्रीय तथा रीतिबद्ध हैं। उच्चकोटि के रसिक होने पर भी ये पूरे आस्तिक थे। नीति-निपुण, निर्भीक एवं स्पष्टवादी केशव की प्रतिभा सर्वतोमुखी है।

अंगद - रावण संवाद

अंगद कूदि गए जहाँ, आसनगत लंकेस।
मनु मधुकर करहट पर, सोभित श्यामल बेस॥

रावण- कौन हो, पठाए सो कौने, ह्याँ तुम्हैं कह काम है?
अंगद- जाति वानर, लंकनायक! दूत अंगद नाम है।

''कौन है वह बाँधि कै हम देह पूँछि सबै दही'?''
''लंक जारि संहारि अच्छ गयो सो बात बृथा कही।
''कौन के सुत?'' 'बालि के', 'वह कौन बालि', न जानिए?
काँख चापि तुम्हें जो सागर सात न्हात बखानिए।''
''है कहाँ वह बीर? अंगद ''देवलोक बताइयो।''
'क्यों गयो' ? रघुनाथ बान बिमान बैठि सिधाइयो।
'लंका नायक को'? विभीषण, देव दूषण को दहै?
'मोहि जीवन होहिं क्यों'? जग तोहि जीबत को कहै।
'मोहि को जग मारि है'? दुर्बुद्धि तेरिय जानिए?
'कौन बात पठाइयो कहि वीर बेगि बखानिए।'

राम राजान के राज आये इहाँ
धाम तेरे महाभाग जागे अबै।
देवि मंदोदरी कुम्भकर्णादि दै
मित्र मंत्री जितै पूंछि देखो सबै।
राखिजै जाति को, पांति को वंश को
साधिजै लोक में पर्लोक को।
आनि कै पाँ परौ देस लै, कोस लै
आसुहीं ईश सीताहि लै ओक को।

रावण - लोक लोकेस स्यौं सोचि ब्रह्मा रचे
आपनी आपनी सींव सो सो रहे।
चारि बाहें धरे विष्णु रच्छा करैं
बान साँची यहै वेदवाणी कहै॥
ताहि भ्रूभंग ही देस देवेस स्यों-
विष्णु ब्रह्मादि दै रुद्रजू संहरै।
ताहि सौं छाँड़ि कै पायँ काके परों
आजु संसार तो पायँ मेरे परै॥

'राम को काम कहा'? 'रिपु जीतहिं'
'कौन कबै रिपु जीत्यौ कहा'?
'बालि बली', 'छल सों', भृगुनंदन
'गर्व हर्‍यो', द्विज दीन महा'॥
'दीन सो क्यों? छिति छत्र हत्यो'
'बिन प्राणनि हैहयराज कियो'
'हैहय कौन?' 'वहै विसर्‍यो जिन'
खेलत ही तोहि बाँधि लियो।

अंगद– सिंधु तर्‍यो उनको वनरा तुम पै धनुरेख गई न तरी।
बाँध्योई बाँधत सो न बँध्यो उन वारिधि बाँधि कै बाट करी।।
अजहूँ रघुनाथ – प्रताप की बात तुम्हैं दसकंठ न जानि परी।
तेलनि तूलनि पूँछ जरी न जरी, जरी, लंक जराई जरी॥

रावण – महामीचु दासी सदा पाइँ धोवै
प्रतीहार है कै कृपा सूर जोवै।
क्षमानाथ लीन्हें रहै छत्र जाको।
करैगो कहा सत्रु सुग्रीव ताको''

सका मेघमाला, सिखी पाककारी
करैं कोतवाली महादंडधारी।
पढ़ै, वेद ब्रह्मा सदा द्वार जाके,
कहा बापुरो, सत्रु सुग्रीव ताके।

डरै गाय बिप्रैं , अनाथै जो भाजै।
परद्रव्य छाँड़ै, परस्त्रीहि लाजै
परद्रोह जासौं न होवै रती को
सु कैसे लरै वेष कीन्हें यती को॥

तपी गयी विप्रनि छिप्र ही हरौं।
अवेद–द्वेषी सब देव संहरौ।
सिया न दैहों, यह नेम जी धरौं
अमानुषी भूमि अवानरी करौं।

अंगद – पाहन तैं पतिनी करि पावन, टूक कियौ हर को धनु को रे?
छत्र विहीन करी छन में छिति गर्व हर्‍यो तिनके बल को रे॥
पर्वत पुंज पुरैनि के पात समान तरे, अजहूँ धरको रे।
होइँ नरायन हूँ पै न ये गुन, कौन इहाँ नर वानर को रे?

कवि परिचय

गिरिजा कुमार माथुर

गिरिजा कुमार माथुर का नाम प्रयोग-वादी कवि के रूप में अत्यन्त आदर के साथ लिया जाता है। श्री माथुर का जन्म सन् 1919 ई० में मध्यप्रदेश के अशोक नगर में हुआ। गिरिजा कुमार की आरम्भिक कविताएँ प्रणय और वैयक्तिक चेतना से प्रभावित थी । धीरे-धीरे उनकी कविताओं में जीवन की विषमताओं का प्रभाव स्पष्ट होने लगा। मध्यम वर्गीय जीवन की कुण्ठा और नवीन सामाजिक चेतना उनके काव्य के मुख्य स्वर हैं,किन्तु प्रगतिवाद के चौखटे को उन्होंने स्वीकार नही किया ।इसीलिए उनकी बाद की रचनाओं में आशा और आस्था की अभिव्यक्ति स्पष्ट परिलक्षित होती है।

गिरिजा कुमार माथुर की मंजीर ,नाश और निर्माण,धूप के धान,शिलापंख चमकीले, छाया मत,छूना मन ,कल्पान्तर,पृथ्वीकल्प आदि प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं।

गिरिजाकुमार माथुर की गणना नई कविता के प्रमुख कवियों में की जाती है ।आज के परिवेश की बदलती हुई परिस्थितियों ,जटिलताओं और कुण्ठाओं से टकराने से आप कभी पीछे नही रहे। हमेशा आपने सामाजिक दायित्व बोध से प्रेरित संघर्ष चेतना को अपनाने पर बल दिया । श्री गिरिजा कुमार जी ने सौन्दर्य बोध को सापेक्ष्य अनुभूति के साथ अपनाया है। आपकी कविताओं में यथार्थ वादी चित्रण सहज रूप में मिलता है। आपकी भाषा में विविधता है, अलंकारों का सहज प्रवाह आपकी भाषा में मिलता है। आपकी शैली सरल,सहज और प्रवाहपूर्ण है।

गिरिजा कुमार माथुर हिन्दी साहित्य के नई कविता के महत्वपूर्ण कवियों में से एक हैं। आपने 'गागर में सागर ' भरने का कार्य कियाहै। हिन्दी कविता में प्रयोग को आपने नई भाषा और शैली प्रदान की है।

विश्वास की साँझ

कुछ न पाया जिन्दगी में
रही साँझ अनाथ
लौट आए युद्ध से हम
हाय खाली हाथ
आज तक मानी नहीं
वह आज मानी हार
एक था विश्वास
वह भी छोड़ता है साथ
अब अकेला हूँ झुका है माथ
सरल होगा आखिरी आघात
कहा मैंने नियति से
सब खत्म कर दे
लूट ले
एक मेरी आस्था,
विश्वास रहने दे
नियति बोली
आस्था वाले
अरे ओ होश कर
ज़िन्दगी में साथ देता है
कभी कोई बशर
असलियत से युद्ध होता है निहत्था
जान ले
इसलिए तू
पूर्व इसके
कवच-कुण्डल दान दे।

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर कोष्ठक में दिए विकल्पों में हैं। सही विकल्प छाँटकर लिखिए –

   अ. अंगद किसका पुत्र था ? (राम, सुग्रीव, बालि)

   आ. बालि ने काँख में किसे छिपा लिया था? (सुग्रीव,रावण, अंगद)

   इ. 'भृगुनंदन' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? (परशुराम, राम, रावण)

   ई. 'तुम पै धनु रेख गई न तरी' किसके लिए कहा गया है?(राम, हनुमान, रावण)

   उ. कवच-कुंडल दान किसने किए थे? (कर्ण, इन्द्र, अर्जुन)

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. कुछ न पाया जिन्दगी में – किसने, किस कारण कहा है?
2. 'विश्वास'की साँझ कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
3. केशव की रामचंद्रिका में अंगद – रावण संवाद अधिक सुन्दर स्वाभाविक और प्रभावशाली है। उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'अंगद-रावण संवाद' शीर्षक में सभी संवाद पात्रों के अनुकूल हैं। स्पष्ट कीजिए।
2. क्या विश्वास की साँझ कविता में निराशावाद है? तर्क सहित समझाइए।
3. संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए-

   अ. नियति बोली, आस्था वाले
   अरे ओ होश कर
   जिन्दगी में साथ देता है
   कभी कोई बशर।
   असलियत से युद्ध होता है
   निहत्था जान ले।

   ब. सिंधु तर्‌यो उनको वनरा तुम पै धनुरेख गई न तरी।
   बाँध्योइ बाँधत सो न बँध्यो, उन वारिधि बाँधि कै बाट करी ।।
   अजहूँ रघुनाथ- प्रताप की बात, तुम्हैं दसकंठ न जानि परी।
   तेलनि तूलनि पूँछ जरी न जरी, जरी लंक जराइ जरी।।

काव्यसौन्दर्य-

1. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी मानक रूप लिखिए –

   साँझ, न्हात, जित्यो, जरी,

2. निम्नलिखित काव्यांशों में अलंकार पहचान कर लिखिए:–

   अ. कौन के सुत? बालि के , वह कौन बालि? न जानिए?

   आ. बाँध्योइ बाँधत सोन बँध्यो, उन वारिधि बाँधि कै बाट करी।

   इ. तेलनि तूलनि पूँछ जरी न जरी, जरी, लंक जराई जरी।

3. निम्नलिखित काव्यांशों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए –

   क. असलियत से युद्ध होता है निहत्था जान ले

   इसलिए तू पूर्व इसके कवच कुंडल दान दे।

   ख. आज तक मानी नहीं, वह आज मानी हार।

   ग. हैहय कौन? वहै, विसरयो? जिन खेलत ही तोहि बाँधि लियो॥

4. अंगद–रावण संवाद काव्यांश में से उन पंक्तियों को लिखिए, जिनमें रौद्र और वीर रस है।

5. 'विश्वास की साँझ' कविता के आधार पर सिद्ध कीजिए की जीवन में आस्था और विश्वास जैसे भाव मानव को त्याग की और प्ररित करते हैं।

समझिए

'गिरा अरथ जल वीचि सम' से स्पष्ट है कि जिस प्रकार जल में लहर रहती है उसी प्रकार शब्द में अर्थ। समाहित हैं। शब्द में अर्थ को स्पष्ट करने वाले कार्य व्यापार या साधन '**शब्द शक्ति**' कहलाते हैं।

शब्द वही है, जिसमें कि अर्थ बोध कराने की शक्ति हो। काव्य शब्द और अर्थ का समन्वित रूप है क्योंकि अर्थ काव्य की आत्मा है, तो शब्द उसका शरीर है।

शब्द तीन प्रकार के होते हैं–

1. वाचक शब्द –इससे वाच्यार्थ (प्रचलित अर्थ) निकलता है।
2. लक्षक शब्द – इस शब्द से लक्ष्यार्थ (मुख्यार्थ से भिन्न अर्थ लक्षित) निकलता है।
3. व्यंजक शब्द – इस शब्द से व्यंग्यार्थ (ध्वनित) निकलता है।

इन्ही आधार को लेकर शब्द शक्ति तीन प्रकार की होती हैं –

1. **अभिधा शब्द शक्ति**– जिस शब्द शक्ति से प्रचलित अर्थ का बोध हो, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं – जैसे दिवस का अवसान समीप था। (यहाँ – दिवस का अर्थ दिन है)

2. **लक्षणा शब्द शक्ति**– इसमें वाच्यार्थ को छोड़कर इससे संबंधित रुढ़ि या किसी प्रयोजन से अर्थ स्पष्ट होता है। जैसे

1. पंकज के फूल ले आओ। (यहाँ पंकज का अर्थ कमल से है, जो रूढ़ अर्थ है)
2. पेट में चूहे कूद रहे हैं। (चूहे कूदना का यहाँ प्रयोजन भूख लगने से है)
3. **व्यंजना शब्द शक्ति** – जहाँ गूढ़ार्थ/ व्यंग्यार्थ ध्वनित हो वहाँ व्यंजना शब्द शक्ति होती है। जैसे –नंद बृज लीजे ठोकि बजाय, में व्यंग्यार्थ ध्वनित है।

6. निम्नलिखित कथनों में निहित शब्द शक्ति का नाम लिखिए–

(क) कौन के सुत ? बालि के,

(ख) है कहाँ वह वीर? अंगद 'देवलोक बताइयो।'

(ग) 'बालि बली' 'छल सौं '

भृगुनंदन गर्व हरयो ,'द्विज दीन महा।

(घ) 'सिंधु तर्यो उनको बनरा, तुम पै धनुरेख गई न तरी'

योग्यता विस्तार

1. विद्यालय में किसी अवसर पर 'अंगद–रावण संवाद' काव्यांश का सभी छात्र मिलकर अभिनय करने का आयोजन कीजिए।
2. रामचंद्रिका से लक्ष्मण– परशुराम संवाद पढ़कर याद कीजिए।
3. गिरजाकुमार माथुर की अन्य कविताएँ विद्यालय के पुस्तकालय से छाँटकर संकलित कीजिए।
4. अंगद– रावण संवाद को एकांकी के रूप में लिखिए।

(शब्दार्थ)

आसनगत – आसन पर, सिंहासन पर, **मधुकर**=भौंरा, ***करहर***= कमल की छतरी, ***यही*** = जल्दी ***अच्छ*** = अक्षय कुमार, रावण का छोटा बेटा, ***काँख***= बगल, ***चांपि***= दबाकर, ***धाम*** = नगर, ***देव– दूषण***=देवताओ के शत्रु, ***पाँति***= सम्मान, इज्जत **:** ***ओक***= घर, ***स्यौं***= से , सींव= सीमा , ***रुद्रजू***= शंकरजी, **काके** = किसके, ***छिति***= क्षिति, पृथ्वी, ***विसरयौं***= भूल गये, धनुरेख, =लक्ष्मणजी ने पर्णकुटी के आगे धनुष की नोक से जो रेखा खींच दी थी,उसे रावण पार नहीं कर सका था। ***लोकेश*** = लोक पाल, ***बाँध्योई बाँधत...बँध्यौं***= तुममें हनुमान को बांधने का प्रयास किया लेकिन तुमन उसे बाँध नहीं सके, ***वारिधि***= समुद्र, बाट करी, रास्ता बना दिया, ***अजहूँ*** –अभी भी, ***दस कंठ***= रावण, जरी जड़ी हुई, ***हैहयराज***= सहसबाहु , ***जराइजरी*** = सोने और रत्नों से जड़ी, ***महामीचु*** = मृत्यु ***प्रतीहार*** = दरवान, द्वारपाल, ***सूर***= सूर्य, ***तूलनि*** = रुई, ***क्षमानाथ***= चन्दमा, ***सका***= रूक्का, पानी भरने वाला कहार, ***सिखी***= अग्नि, पाकधारी, रसोईया, ***जौवे*** = देखता है, ***महादण्डधारी***=यमराज, ***वापुरो***= बेचारा , ***संहारौं***= नष्ट करता हूँ, ***अभामुषी***= मनुष्यों में से हनि, ***अवानरी***= वायरों से हीन, ***पाहन तें.. करि*** = श्री रामचन्द्र जी ने पत्थर की शिला बनी अहल्या को स्त्री बना दिया था, ***पुरैनि*** = कमल, ***धरको***= धड़का, ***नर वानर को***= मनुष्य और बानरों की तो बात ही क्या?

नियति ———— ***बशर*** ————

***